APPM

PANCHPARGANIA LANGUAGE AND LITERATURE

पंचपरगनिया भाषा और साहित्य

SUBJECT CODE : 17

विषय कोड : 17

PAPER – IX

पत्र – IX

Full Marks : 100
पूर्णांक : 100

Time : 3 Hours
समय : 3 घण्टे

निर्देश : खाँधा-"क", खाँधा-"ख" आर खाँधा-"ग" तिन खाँधा लेक पुछल सवालेक जबाप देल निरदेस आधारे लिखा ।

Marks
अंक

खाँधा – "क"

हेंठे देल मइधे कन' **पाँच** सवालेक जबाप लिखा : **10 × 5 = 50**

1. पंचपरगनिया स्वर बरन' केर बाचिक करा । **10**
2. पंचपरगनिया बेअंजन बरन' केर पंचम आछर केर लिखित रूपे काभुमिका आहे ? बरनिमा करा । **10**
3. पंचपरगनिया लिंग भेद केर बाचिक उदाहरन दे के करा । **10**
4. पंचपरगनिया बिसेसन केर भेद के निमुद (उदाहरन) दे कहन लिखा । **10**
5. पंचपरगनिया कारक परसरग' केर बाचिक करा । **10**
6. पंचपरगनिया माहान एक बचन लेक बहुबचन बनाएक भेद के लिखा । **10**
7. पंचपरगनिया उपसरग' आर परतए माहान का तफाइत आहे ? उदाहरन दे कहन बाखान करा । **10**
8. पंचपरगनिया माहान संइगा के-के कहल जाएगा ? पंचपरगनिया माहान कन' पाँच टा संइगा सबद' लेक किरिआ रूप के लिखु । **10**

खाँधा – "ख"

हेंठे देल मइधे कन' **तिन** सवालेक जबाप लिखा : $10 \times 3 = 30$

9. पंचपरगनिया पइद साहित कर बिकास काथा के खाट' खुँटिए लिखा । **10**

10. पंचपरगनिया निबंध चाहे नाटक साहितेक काथा के छटे-खाट' लिखा । **10**

11. ल'क-कहनि के-के कहएँ ? पंचपरगनिया ल'क कहनिए इतिहास काथा लुकाल आहे, बाखान करां । **10**

12. पंचपरगनिया कबि बरजुराम चाहे राजकिसर सिहं केर किरति के उखराए के लिखु । **10**

13. हेंठे देल पइद अंस केर बेइखा करा : **10**

"कति खने फुटए हरदि रे झिंगा फुल ?

कति खने फुटए लाल गेंदा फुल ?

गमकए । "

चाहे

"इ घरेक लग गिला कहाँ-कहाँ गेला ह'

तेलाइए तेल दे के घघि झाड़े गेला ह' ।"

14. पंचपरगनिया कहनि चाहे उपनेआस साहित रचना माहान लेखक केर जगदान के लिखु । **10**

खाँधा – "ग"

हेंठे देल सवालेक जबाप लिखा :

15. हेंठे देल मइधे कन'एकता माहान निबंध लिखु : **12**

(क) फदिखेइल

(ख) पुसपरब

(ग) दासम झारना

16. हेंठे देल गइद अंस टा केर पंचपरगनिया माहान अनुवाद करा : 8

"विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का बहुत ही महत्त्व है । अनुशासन ही विद्यार्थी की उन्नति का एक मात्र द्वार है । इसी से समाज के साथ-साथ उन्नत राष्ट्र का निर्माण होता है । आज के समय में विद्यार्थियों में अनुशासन का ह्रास होता हुआ दीखाई दे रहा है, जो कि चिन्ता का विषय है । कुछ छात्र बिना पढ़ाई-लिखाई के अगली कक्षा जाना चाहते हैं या फिर गलत तरीके से परीक्षा में उत्तीर्ण होना चाहते हैं । स्कूल तथा कॉलेजों में अनुशासनहीनता आज साफ नजर आती है । इस अनुशासनहीनता के लिए कहीं-न-कहीं हमारी शिक्षा-प्रणाली भी दोषपूर्ण है । माता-पिता भी काम-काजी होने के कारण आज समाज में हर स्तर पर अनुशासन की कमी दीखाई देती है । विद्यार्थियों में अनुशासित रहने की भावना जाग्रत करने के लिए आवश्यक है कि शिक्षा पद्धति के हरेक पहलू का सुधार हो । समय-समय पर अभिभावकों से मिलकर छात्रों में अनुशासनहीनता को दूर किया जा सकता है । इसमें शिक्षक एक अहम भूमिका निभा सकते हैं ।"